International Journal of Information Movement *Vol. 9 Issue III* *(July 2024)*
Website: www.ijim.in *ISSN: 2456-0553 (online)* **Pages 64-68**

हरियाणवी लोकगीतों का बदलता स्वरूप

सुमित रंगा
शोधार्थी
कुरुक्षेत्र- विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र
Email id-dr.sumit1585@gmail.com

सारांश : हरियाणा को बहुधान्य भूमि कहा गया है, जहाँ मवेशियों की धवल दुग्धधारा सदैव प्रवाहित होती रही है। हरियाणवी संस्कृति में दूध और दही का प्रमुख स्थान है, जिसे लोकगीतों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है। लोकगीत भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग हैं और प्राचीन काल से चली आ रही समृद्ध परंपरा का हिस्सा हैं। ये गीत जनसाधारण की भावनाओं, रीति-रिवाजों और रहन-सहन का प्रतिबिंब होते हैं। लोकगीतों की सौंधी महक जनमानस को सदैव आह्लादित करती है। लोकगीत और सामान्य गीतों में अंतर होता है; लोकगीत जनसाधारण की आंतरिक भावनाओं का प्रतीक होते हैं और इन्हें ठेठ भाषा में गाया जाता है। लोकगीतों का वर्गीकरण पौराणिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, पर्व संबंधी और पर्यावरण संबंधी गीतों में किया जाता है।

मुख्य शब्द: हरियाणा, लोकगीत, बहुधान्य भूमि, संस्कृति, लोकसंस्कृति, जनसाधारण

1.0 प्रस्तावना:

हरियाणा बहुधान्य भूमि है जहाँ मवेशियों की धवल दुग्धधारा सदैव प्रभावित होती रही है। कहा भी गया है,

''देशां मे देश हरियाणा जित दूध दही का खाणा''

लोकगीत भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। भारत में लोकगीतों की समृद्ध परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। देश की पुरातन संस्कृति, रीति-रिवाज, रहन-सहन खान-पान, वेशभूषा आदि को ही लोकगीतों के माध्यम से ही व्यक्त किया जाता है। कहा जा सकता है कि लोकगीत लोकसंस्कृति का जीवंत प्रतिबिंब है । परम्परा से संकृप्त होने के कारण ये कभी पुरातन नहीं होते, बल्कि उस विशाल वृक्ष की भांति इनकी मजबूत जड़े होती है जो सदैव हरे-भरे होकर अपनी सुगंध विकर्ण करते रहते है। लोकगीतों की सौंधी महक जनमानस को सदैव आह्लादित करती रहती है।

1.2 लोक क्या है?

'लोक शब्द संस्कृत के 'लोकदर्शने' धातु में 'द्यञ' प्रत्यय जोड़ने से निष्पन्न हुआ है" जिसका सामान्य अर्थ है 'देखना '

इस प्रकार वह जन समुदाय जो देखने का कार्य करता है, वह लोक कहलाता है।

1.3 लोकगीत क्या है?

लोकगीत और सामान्य गीत में पर्याप्त अंतर है। वस्तुतः लोकगीत जनसाधारण की आंतरिक भावनाओं का प्रतीक है। प्रायः सभी गीतों में नृत्य गायन और वादन का संगम होता है जिसको स्वर और लय का अभिसार कहते हैं।

आमतौर पर लोकगीत गाँव-देहातों में गाए जाने वाली जनसाधारण की भावनाओं का प्रस्फुटन होते हैं, जिन्हें ठेठ भाषा में गाया जाता है। वस्तुतः लोकगीत जनसाधारण के हृदय से निसृत ऐसी दिव्य वाणी है जिसमें परम्परा और संस्कृति का अद्भूत समन्वय रहता है। यही कारण है कि ये गीत पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांरित होते रहते है तथा इनमें नएपन का समावेश ही इन्हें अनुठा और तरोताजा बनाए रखता है।

2.0 लोकगीतों का वर्गीकरण:-

लोकगीत लोकसाहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। यह जनसामान्य की भावनाओं का निःसर्ग उच्छ्वास है । प्रायः प्रत्येक प्रदेश में लोकगीतों (आंचलिक गीतों) की विश्द परंपरा रही है। हिन्दी प्रदेश में गाए जाने वाले लोकगीतों के वर्गीकरण की परंपरा की आधीन कड़ी के रूप में श्री रामनरेश त्रिपाठी का नाम अविस्मरणीय है, इसी कड़ी में मूर्धन्य विद्वान शंकरलाल यादव का नाम भी लिया जा सकता है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से लोकगीतों की अपार संपदा को निम्न वर्गो में

वर्गीकृत किया जा सकता है।

2.1 पौराणिक गीत :-

(i) **चक्की और चरखे के गीत :-** स्त्रियाँ घरों में आटा पीसते वक्त भी गीत गाती है। कहा जाता है जितनी देर में चार फेरे चक्की के पूरे होते है उतनी ही देर में गीत की एक कड़ी पूरी होती है एक प्रकार से हाथ हृदय और वाणी की तादातम्य स्थापित हो जाता है। चक्की की ध्वनि जिस स्वर में निकलती है उसी से मिलते-जुलते स्वरों में गीत की पक्तियों की आवृतियाँ भी की जाती है।

2.2 धार्मिक गीत:

(i) देवी देवताओं के गीत

(ii) भजन व कीर्तन संबंधी गीत

2.3 सांस्कृतिक गीत:-

(i) संस्कार संबंधी गीत

(ii) जन्म संस्कार

(iii) जच्चा-बच्चा के गीत

(iv) मुण्डन के गीत

(v) यसोपवीत के गीत

(vi) विवाह के गीत (बान के गीत, हल्दी, मेहंदी, विदाई के गीत)

(vii) मृत्यु के गीत

2.4 पर्व संबंधी गीत:-

(i) 15 अगस्त का पर्व

(ii) 26 जनवरी का पर्व

(iii) तीज त्योहार, होली, दीपावली क्रिसमस इत्यादि के गीत

2.5 पर्यावरण संबंधी गीत:-

(i) ऋतु संबंधी गीत (वर्षा, बसन्त, ग्रीष्म व शिशिर)

(ii) श्रावण के गीत

(iii) बसन्त पंचमी के गीत

2.6 नवीन चेतना के गीत :-

(i) शिक्षा को बढ़ावा देने वाले गीत

(ii) बेटी बचाओ व बेटी पढ़ाओ से संबंधित गीत

(iii) राष्ट्रीय चेतना के गीत

2.7 आधुनिक नवचेतना के गीत :-

(i) संचार क्रांति के गीत (भ्रष्टाचार को उजागर करना, जनमानस के हित की बात करना)

(ii) कृषि से संबंधित गीत

2.8 विविध गीत:-

(i) झूमर के गीत

(ii) लोरी गीत

(iii) मेले के गीत

3.0 लोकगीतों का बदलता स्वरूपः-

यदि देखा जाए तो आधुनिकता के प्रभाव स्वरूप लोकगीतों के परम्परित स्वरूप में व्यापक

परिवर्तन हुआ है। प्रायः 80 के दशक के बाद हमारे मूल धर्म, दर्शन साहित्य, संस्कृति आचार और विचार में व्यापक फेर बदल हुआ है। जिसका प्रभाव लोकगीतों और जीवन दृष्टि में परिलक्षित होता है।

- जनमानस का ज्यादा रूझान गाँव से शहर की और हो गया है। जिससे अब वे अपने काम व घर के बीच सिमटकर ही रह गए है। बड़े-बूढ़ो के साथ बैठकर लोकगीत गाने का समय ही नहीं होता है।
- हम पुरातन संस्कृति से अप संस्कृति की तरफ बढ़ते जा रहे है जहाँ गीतों का नामोनिशान भी नहीं है।
- आजकल इंटरनेट के बढ़ते प्रचलन के कारण प्रत्येक बच्चे व युवा को मोबाइल फोन व टेक्नोलॉजी का जरूर पता है लेकिन लोकगीतों के बारे में उन्हें न तो पता है व न जानना चाहते हैं।
- आजकल आधुनिकता (Modernization) के कारण लोकगीत लुप्त होते जा रहे हैं। इनकी जगह अभद्र व अश्लील गानों का प्रचलन बढ़ता ही जा रहा है।

4.0 उपसंहारः-

लोकगीत लोकसाहित्य की आत्मा है। लोकगीतों का निर्वाह मौखिक पंरपरा से किया जाता है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी यह परम्परा चली आ रही है। लोकगीत हमारी सांस्कृतिक विरासत है लेकिन अब वह विलुप्त होने के कगार पर है।

समग्र अध्ययन के पश्चात् कहा जा सकता है कि लोकगीत मुखर लोकाभिव्यक्ति का ही स्वरूप है। प्रायः आवाल, वृद्ध, नर-नारी, किसान, मजदूर जीवन की ऊब और थकान को मिटाने के लिए खेत-खलिहानों में बाँसूरी, मृदंग, डफ, ढोल, माधल आदि वाद्य यंत्रो पर थिरकते हुए खेतों की मेढ़ो पर चरवाहे पशुओं को चराते हुए तथा माताएँ बच्चों को लोरियों की मधुर झंकार को झंकृत करते हुए इन्हे गाती और सुनाती है।

अतः आधुनिक नवचेतना के गीत, पूर्व संबंधी लोकगीत व अन्य सभी प्रकार के लोकगीतों के पहले व बदलते स्वरूप को दिखाना मेरा उद्देश्य रहेगा।

5.0 संदर्भ:

1. शारदा, साधु राम (संपा) हरियाणा के लोकगीत, भाषा विभाग हरियाणा, 19701
2. डा. विद्या चौहान, लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि प्रथम संस्करण (1972) प्रगति प्रकाशन ।
3. डा. भीम सिंह, हरियाणा के लोकगीत, आर्य बुक डिपो करोलगंज, नई दिल्ली (1981)
4. रश्मि, हरियाणवी लोकगीतों में युग बोध, (2007) रोहतक, शोध प्रबंध, महर्षि दयानंद

विश्वविद्यालय ।

5. सांगवान, गुणपाल सिंह (1989) हरियाणवी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, चण्डीगढ़, हरियाणा साहित्य अकादमी ।